तुलसीदास कृत रामचरितमानस की प्रासंगिकता

तुलसीदास भक्ति काल के प्रमुख कवि हैं। वर्तमान समय में तुलसीदास कृत रामचरितमानस की प्रासंगिकता है। क्योंकि इसमें लोकजीवन को बहुत ही सुंदर रूप में दर्शाया गया है। सगुन उपासक तुलसीदास को आधुनिक समय में लोक गायक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने रामचरितमानस में श्री राम के आदर्श रूप का चित्रण किया है। तुलसीदास के सभी ग्रंथों में से रामचरितमानस को सबसे अधिक लोकप्रियता मिली। रामचरितमानस एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसने अपनी एक अलग पहचान बनाई तुलसीदास कृत रामचरितमानस जनमानस महाकाव्य है, जिसमें समाज और परिवार के प्रतिरूप को दर्शाया गया है।

रामचरितमानस को जानने से पहले तुलसीदास के व्यक्तित्व को जानना आवश्यक है। जॉर्ज ग्रियर्सन तुलसीदास के बारे में लिखते हैं कि "तुलसीदास पूर्ण कवि थे ज्ञानियों के लिए उनकी रचना ज्ञान कुंज है। भक्तों के लिए भक्ति का अमृत सरोवर सुधारकों के लिए सुधार दृष्टि प्रदान करने वाली अलौकिक कसौटी और काव्य रसिकों के लिए वह रस वृष्टि है जो उनके समग्र व्यक्तित्व को रसमग्न करती है।"1 तुलसीदास के रामचरितमानस से प्रभावित होकर अयोध्या सिंह उपाध्याय लिखते हैं कि "बनी पवन भाव की भूमि भलो, हुआ भावुक भावुकता का भला।

कविता करके तुलसी ना लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला"2

भारतीय संस्कृति के परंपरावादी गोस्वामी तुलसीदास कालजयी व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी है। उनकी रामचरितमानस एक कालजयी रचना है। वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता और भी ज्यादा बढ़ जाती है जब रामचरितमानस के प्रमुख पात्र श्री राम को आदर्शवादी व्यक्तित्व के रूप में दिखाया जाता है। तुलसीदास कृत संपूर्ण रचनाओं में रामचरितमानस को एक शोध का विषय भी बनाया गया है जिसमें काफी संख्या में शोधार्थियों ने शोध किया है रामचरितमानस को कथा वाचकों ने घर-घर तक पहुंचाने का एक बड़ा कार्य किया जिससे यह तुलसीदास की सर्वश्रेष्ठ रचना भी बनी।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस में लोक जीवन के विभिन्न पहलुओं को उभारा गया है। तुलसीदास के काव्य का मूल उद्देश्य लोकमंगल रहा है। लोकमंगल का अर्थ परिवार और समाज से है समाज और परिवार में सम्मान नैतिक मूल्य भी स्थापित करना तथा उद्धत जीवन मूल्य का सबका ध्यान केंद्रित करना। रामचरितमानस में तुलसीदास की दृष्टि राम कथा के माध्यम से आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना की और केंद्रित रही है। यही कारण है कि उसमें जीवन के विविध प्रसंगों का उल्लेख है तुलसी लोकमंगलकारी रहे हैं। वे एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे जो समाज एवं परिवार में नैतिक मूल्यों के पक्षधर हो इसे व्यवस्थित रूप में तभी समाज के सामने लाया जा सकता था जब परिवार एवं समाज का एक आदर्श रूप हमारे सामने उपस्थित हो। तुलसीदास एक ऐसी समाज की परिकल्पना करते हैं जहां सभी सुखी हो सभी संपन्न हो और निरोग हो।

तुलसीदास ने एक पारिवारिक आदर्श प्रस्तुत करते हुए रामचरितमानस के विभिन्न पात्रों को उकेरा है। सीता पतिव्रत धर्म का अनुपालन करती है। पति का अनुगमन करते हुए 14 वर्ष का वनवास प्राप्त करती है। राम आदर्श पुत्र है जो पिता की आज्ञा पर मिलने वाले राज्य को त्याग कर वन गमन के लिए तुरंत तैयार हो जाते हैं। वे कैकयी से कहते हैं कि -

"सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।।

तनय मातु पितु तोषनि हारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा।।"3

राम आदर्श भाई की परिकल्पना करते हैं उन्हें भारत पर पूरा विश्वास है कि वे लक्ष्मण को आश्वस्त करते हैं कि कि भारत को राजा के रूप में अयोध्या वासी स्वीकार करेंगे। तुलसीदास कहते हैं कि

"भरतहि होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ।

कबहुं कि कांजी सीकरनि छीर सिंधु बिनसाइ।।4"

अयोध्या के नर नारी भारत के प्रेम की सराहना करते हैं और उन्हें राम की प्रतिमूर्ति ही बताते हैं। वह कहते हैं कि-

"मातु सचिव गुर पूर नर नारी। सकल सनेहं बिकल भए भारी।।

भरतहि कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही।।"5

आज समाज में एक विखंडन की स्थिति पैदा हो गई है। समाज के पारस्परिक व्यक्तियों में प्रेम भाव का अभाव देखने को मिलता है, वहीं पर तुलसीदास के रामचरितमानस में एक आदर्श रूप हमें दिखाई देता है। जिसमें एक पति का आदर्श रूप, पत्नी का आदर्श रूप, भाई का आदर्श रूप और एक राजा का आदर्श रूप वर्णित होता है।

तुलसीदास के रामचरितमानस में मर्यादा को महत्वपूर्ण स्थान गया है राम सुबह उठकर के सबसे पहले अपने माता-पिता को प्रणाम करते हैं बाद में अपने राजगुरु को प्रणाम करते हैं

"प्रातः काल उठि कै रघुनाथ। मातु-पिता गुरु नावहि माथा।"6

इसी प्रकार लक्ष्मण भी अपने भाई राम और अपनी भाभी और गुरु को प्रणाम करते हैं आज के समय में इसी प्रकार की मर्यादा की आवश्यकता है जो की रामचरितमानस में हमें देखने को मिलती है।

तुलसीदास की आरंभिक प्रार्थना 'मंगल करनि कलिमल हरनि' से प्रारंभ होती है। तुलसीदास समस्त समाज विश्व की कल्याण की भावना रखते हैं। रामलोक है लोकनायक के रूप में आए हैं तुलसीदास कहते हैं कि -

"जेहि बिधि सुखी होहिं पर लोगा।

करहिं कृपानिधि सोई संजोग।।"7

तुलसीदास के रामचरितमानस में समन्वय की भावना एक महत्वपूर्ण मान्यता है। समन्वय की भावना पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। भक्ति काल में भक्ति के दो रूप थे निर्गुण भक्ति और शगुन भक्ति समाज के कठिन संरचना को बनाए रखने के लिए तुलसीदास ने एक महाकाव्य ग्रंथ की रचना की वह तुलसीदास की रामचरितमानस थी जिसमें वह लिखते हैं कि -

"सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुद् भेदा।।

अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।8" तुलसीदास ने एक राम राज्य की परिकल्पना की है। जिसमें सभी निरोग और बेर मुक्त है इसमें तुलसीदास के लोक मंगल कार्य व समन्वयवादी रूप है। तुलसीदास राम राज्य के बारे में बताते हैं कि –

"नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।

नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।"9

रामचरितमानस में निरूपित जीवन व्यवस्था एवं राम राज्य की परिकल्पना, आदर्श समाज तथा आदर्श राज्य की कोरी कल्पना मात्र नहीं है बल्कि यह अनुभवजन्य और व्यावहारिक है इस ग्रंथ के माध्यम से तुलसीदास ने परस्पर स्नेह सम्मान के साथ कर्तव्य प्रणेता के माध्यम से न केवल जीवन को समृद्ध और सुखी बनाने में योगदान दिया है बल्कि रामचरितमानस के पात्रों के माध्यम से से सामाजिक कृतियों के उन्मूलन में भी अभूतपूर्व कार्य किया है। आज के संदर्भ में रामचरितमानस बहुत ही प्रासंगिक है क्योंकि वर्तमान समय में समाज अनेक प्रकार की कुरीतियों से त्रस्त है और रूढ़ियों से गिरा हुआ है। इस समय में तो रामचरितमानस की राम परिकल्पना बहुत सहयोगी बन जाती है, जब एक राम राज्य की स्थापना की जाए।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस के प्रासंगिकता आज भी बहुत अधिक है यह इसलिए के धार्मिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि यह एक आदर्श जीवन शैलियों, सामाजिक मूल्यों का भी प्रतीक है। तुलसीदास के रामचरितमानस में जीवन के विभिन्न मूल्य को प्रस्तुत किया गया है जैसे मर्यादा है, सत्य है, त्याग के, कर्तव्य, धर्म इत्यादि इसमें भगवान राम के प्रति भक्ति और आस्था का एक मजबूत संदेश दिया गया है। रामचरितमानस में सामाजिक और राजनीतिक संदेश भी निहित है जो आज के समय में भी प्रासंगिक है। इसमें अवधी भाषा का प्रयोग किया गया। यह अवधि साहित्य का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। कुल मिलाकर रामचरितमानस एक ऐसा ग्रंथ है जो आज भी प्रासंगिक है और हमें एक आदर्श जीवन जीने, एक अच्छे समाज बनाने और भगवान के प्रति भक्ति और आस्था रखने के लिए प्रेरित करता है।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस पर अनेकों चर्चाएं, आलोचनाएं, और समीक्षाएं हुई है, उतनी शायद किसी अन्य ग्रंथ पर ना हो। रामचरितमानस शोध परक रचना है जिस पर काफी शोध भी किए गए हैं।

संदर्भ

1.हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ सं.42

2.वैदेही वनवास, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', पृष्ठ सं. 21

3.रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ सं.122

4.वही, पृष्ठ सं.184

5.रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ सं.286

6.वही, पृष्ठ सं. 251

7.कवितावली, तुलसीदास, पृष्ठ सं.121

8.रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ सं.314

9.कवितावली, तुलसीदास, पृष्ठ सं.168

राजकीय कन्या महाविद्यालय जसौरखेड़ी, झज्जर

डॉ सुनील कुमार

सहायक (प्रोफेसर) हिंदी